BA-III (H)
मैथिली प्रतिष्ठा
पत्र - पंचम
मैथिली साहित्य इतिहास

प्रो० रंजीत कुमार राम
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
V.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (LNMU)

लोकनाट्य :

लोकसाहित्यमे जकाँ लोकनाट्य आरम्भ ओ विकास कहिआ भेल, से अज्ञात अछि। परन्तु मानव-प्राणीक अनुकरणीय शीलताक सहजात प्रवृत्तिक कारणे अनेक प्रकारक नाट्यक प्रचलन आरम्भ भेल अछि। नाट्य-शास्त्र निर्माण तँ बहुत पाछाँ भेल होयत, परन्तु एक आदर्श लोकनाट्य सएह रहल हायत।

मैथिली लोकगीत हो अथवा लोकगाथा, सभक निम्न-आर्थिक वर्गमे जाहि रूपक गान अथवा पाठक परिपाटी अछि लीलानाट्यक बाद प्रेमाख्यान-मूलक नाट्य सर्वाधिक प्रचलित भेल जट-जटिन। प्रेम आधारित लोकनाट्य थिक। ई नाट्यक नारीलोकनिक मनोरंजनक हेतु एकमात्र नारी द्वारा अभिनीत होइत अछि। दाम्पत्य जीवनक उद्दाम प्रेम-विलासक अभिव्यक्ति जेहन जट-जटिनमे भेल अछि तेहन अन्यत्र दुर्लभ अछि।

वस्तुत: मैथिली लोकनाट्य मिथिलाक सांस्कृतिक चेतनाक उपलब्धि थिक जे समाजक निम्नवर्गीयक अन्तस्तलकेँ, प्राणतत्त्वके बनओने रहल अछि। ओइ खेदक विषय जे मैथिली लोकनाट्य दिस वैज्ञानिक रीतिएँ संकलित कए प्रकाशित करबाक दिशि साहित्यमनीषीक ध्यान एखन धरि परिपूर्ण नहि गेल अछि। तथापि, झुरमा सलहेस, जटजटिन, श्यामा-चकेबा प्रभृतिक कार्य अभिनन्दनीय थिक।

[signature]
04/05/20